गुरु नानक – सबद ७

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

सार: पदार्थ को न तो बनाया जा सकता है, न ही नष्ट किया जा सकता है; यह केवल जगह और समय के माध्यम से रूप बदलता है। सर्वव्यापी अनंत चेतना अलग-अलग रूप धारण करती है लेकिन मूल रूप एक ही रहता है।

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
सर्वव्यापी अनंत चेतना को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है।

आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
सर्वव्यापी अनंत चेतना अपने आप में शुद्धतम रूप है।

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
जो लोग इस वास्तविकता का सम्मान करते हैं उन्हें संतुष्टि मिलती है।

नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
नानक इस सोच को एक पवित्र ख़ज़ाने के रूप में महत्त्वता देते हैं।

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
व्यक्त करते और सुनते समय भाव के सार को ग्रहण करें।

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
अज्ञानता की पीड़ा दूर हो जाती है, और आंतरिक रूप से सद्भाव की स्थिति स्थापित हो जाती है।

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥
जो लोग ज्ञान की तलाश पर केंद्रित हैं, वो अज्ञानता के अंधेरे को दूर करते हैं और एकता का प्रकाश प्राप्त करते हैं। वह स्वयं को ऊर्जा की आभा और ज्ञान के शास्त्र से परिचित कराते हैं। आध्यात्मिक लोग अपनी जागरूकता प्राप्त करने में मग्न रहते हैं।

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
दिव्यता में ईश्वर है जो स्वयं ही ज्ञान है। आध्यात्मिक गुरु 'गोरख' में ज्ञान है। लिंग रहित रचनाकार 'ब्रह्मा' में ज्ञान है। 'पारबती माई', स्त्री पोषण गुणों में ज्ञान है।

जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
यदि समझ भी लिया जाए तो भी सर्वव्यापी चेतना का वर्णन नहीं किया जा सकता।

गुरा इक देहि बुझाई ॥
वह ज्ञान जो अज्ञानता के अँधेरे को दूर करता है, जागरूकता का प्रकाश प्रदान करता है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥
सभी प्राणियों का दाता एक ही है और मुझे इस सच को नहीं भूलना चाहिए। (५)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि एक पूरे जीवन की कुंजी इस जागरूकता में निहित है कि हर व्यक्ति के पास यह ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है और स्वतंत्र आत्म की धारणा एक भ्रम, एक फ़रेब है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com